राजस्थान के मुख्य मंत्री का पत्र प्रधान सम्पादक के नाम

उप सचिव
मुख्य मन्त्री, राजस्थान, जयपुर

SO 1925/C. M. OG. 78

21 अक्टूबर, 1978

मुख्य मंत्री को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दीपावली के पावन पर्व पर 'बीकानेर-दर्शन' पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पुस्तक में बीकानेर की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक गति-विधियों का परिचय दिया जायेगा।

मुख्य मन्त्री आशा करते हैं कि यह पुस्तक बीकानेर के बारे में जानकारी चाहने वालों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध होगी एवं इसकी सफलता के लिए। शुभ कामना प्रगट करते है।

रतनसिंह सिघी

डॉ० सिद्धराज
प्रधान संपादक
बीकानेर-दर्शन, पुरानी लेन
गंगाशहर-(बीकानेर)

बीकानेर दर्शन

सिद्धराज

* डा० सिद्धराज
* प्रकाशक एवं मुद्रक

* मूल्य – ७.०० रुपये

* प्रथम संस्करण
* दीपावली--१९७८

● प्राप्ति स्थान—
आर्य-भारती, पुरानी लेन,
गंगाशहर, बीकानेर
(राजस्थान)

डॉ. सिद्धराज

ऐतिहासिक नगर बीकानेर की स्था
श्रेय, जोधपुर नगर के संस्थापक राव ज
के सुपुत्र बीकोजी को है। राव बीकोजी के
क्षेत्र का आधिपत्य सांखलो, भाटियों एव
के हाथों में था। राव बीकोजी ने अपने अ
शौर्य पराक्रम एव दूरदर्शिता तथा विलक्षण बु
से क्षेत्र को अपने हाथों में लेकर स्वतन्त्र-राज्य
डाली। राव बीकोजी (वि० स. १५२६-१५
से लेकर अन्तिम नरेश महाराजा श्री सादूलसि
(वि० स. २००१-२००७) तक इस क्षेत्र पर
राठौड़ कुल के २२ नरेशों ने अपना शासन कि
सभी नरेशों ने अपने-अपने शासन काल में देश के विकास में अभूत पूर्व
दिया। इनमें से राजा रायसिंह जी, राजा करणसिंह जी और स्वनाम ध
महाराजा श्री गंगासिंह जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। स्थापत्य कला
दृष्टि से राजा रायसिंह जी ने गढ और परकोटे तथा मन्दिरों का निर्माण कराया
हिन्दुत्व की रक्षा के लिये राजा करणसिंह जी ने अपने शौर्य का परिचय दे
'जय जंगल धर बादशाह' की उपाधि से विभूषित किये गये। रेवेन्यू, स्थापत
एव नये नगरों के निमार्ण में महाराजा श्री गंगासिंह जी ने अभूत पूर्व कार्य
किये। अतः जन प्रिय, समाज सेवी, कुशल प्रशासक स्वनाम धन्य महाराजा
श्री गंगासिंह जी (वि० स. १९४४-२०००) को बीकानेर का भाग्य विधाता
कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

बीकानेर—दर्शन का प्रकाशन पांच भागों में प्रकाशित करने की योजना है। प्रत्येक भाग में बीकानेर के विभिन्न पहलुओं का विस्तार से विवेचन किया जायेगा। बीकानेर का सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं धार्मिक जीवन अपने आपमें महान् है। यहां का ऐतिहासिक, व्यवसायिक स्वरूप विदेश में अपना महत्व पूर्ण स्थान रखता है। राज्य सरकार के एवं केन्द्रीय सरकार के विभिन्न विभागों के मुख्यालय यहां पर स्थापित है। पाकिस्तान की सीमा से लगे रहने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से भी इसका महत्व है। राजस्थान नहर के उत्तरोत्तर विकास के कारण अकाल की समाप्ति सुनिश्चित है। दुग्ध योजना (उरमूल डेयरी) से ग्रामीण लोगों के जीवन का विकास एवं पशुधन की महत्ता को बढ़ावा मिल रहा है। आकाशवाणी केन्द्र की व्यवस्थित सेवाओं से यहां का शहरी और ग्रामीण जीवन लाभान्वित हो रहा है।

नगर विकास न्यास द्वारा आवासीय व्यवस्था के लिये स्थापित कालोनियों में नागरिक जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं के लिये पूरा प्रयत्न किया जा रहा है तथा सड़कों एवं नालियों के निर्माण के लिये १० लाख रुपये का बजट है। बीकानेर-दर्शन का प्रथम भाग-नगर की सम्पूर्ण जानकारी देने के लिये भरसक प्रयास किया गया है।

अन्त: मैं मैं अपनी त्रुटियों के प्रति क्षमा याचना करता हुआ नगर का यह प्रथम पुष्प मां भारती के चरणों में अर्पित करता हूं। विज्ञ पाठक ही इसका निर्णय करेंगे। सुझाव सादर आमन्त्रित है जिसका सदुपयोग अगले अंकों में किया जा सके।